IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

कालिदास के अभिव्यक्ति सौंदर्य: 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में प्रकृति और सौन्दर्य

तर्पदा मिश्रा[1] and डॉ. सुषमा रानी[2]
[1]शोधार्थी, संस्कृत विभाग
[2]सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
ओ. पी. जे. एस. विश्वविद्यालय, राजस्थान

भूमिका

शंकर सत्यम्, शिवं सुन्दरं के मूर्त रूप हैं। अखिल ब्रह्माण्ड का सत्य तत्त्व वैज्ञानिक के अध्ययन का विषय हैं, शिव तत्त्व धर्म है तथा सुन्दर तत्त्व काव्य तथा कला का विषय हैं। काव्य क्षेत्र में समस्त कलायें नाटक में ही एकत्रीभूत होती हैं ।' कलाओं को हम जीवन से पृथक नहीं कर सकते । जीवन स्वयं एक कला है धनंजय के अनुसार जीवन की अवस्थाओं का अनुकरण ही नाटक हैं। 2 अतः समस्त कलायें नाटक में समाहित हो जाती हैं। नाटक का एक नाम 'रूप' भी हैं। रूप सौन्दर्य का आधार तथा नेत्र का विषय हैं। 3 सौन्दर्य भी नेत्र का विषय है अतः काव्यगत सैन्दर्य बोध का पूर्ण रूप हमें नाटक में ही प्राप्त हो सकता हैं। सौन्दर्य बोध पर विचार करने से पहले सौन्दर्य शब्द पर विचार कर लेना आवश्यकता है।

सन्दर्भ-सूची

[1]. 'न स योगो न तत् कर्म नाट्यस्मिन् यत्र दृश्यते । सर्व शाखाणि शिल्पानि कर्माणि विविधानि च ।। ना.शा.१/१९४

[2]. * अवस्थानुकृतिनर्नाट्यम् दशरुषकम् पृष्ठ - ४

[3]. *रुपश्यतीच्यते दशरूपकम् पृष्ठ ४

[4]. Sundara, mf (i)n (perhaps for sunaras sundaraja being intserted as in gk. Avops for avnp) beatiuful, handsome, lovely, charming, agreeable(dictionary by sir monier williams at the darendon press, page-1227 Sanskrit

[5]. सुन्द- savtra root, meaning of shine, to bright, vop (Sanskrit English dictionary p. 1227

[6]. क्षोभ केनचिदिन्दु- प्रतिद्वन्दिभिः । अभिज्ञान शाकु. ४/५ पृ. १२४.

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, February 2023

[7]. जैसे चार हाथ, पांच मुख, तीन नेत्र, नील वर्ण आदि।

[8]. उपमा कालिदासस्य, भारवेरर्थगौरवम् दण्डिनः पदलालित्यमं माघे सन्तिस्त्रयो गुणाः।

[9]. जैसे दुर्वासा के शाप तथा अंगुठी की कथा से पौराणिक दुष्यन्त का चरित्र धुलकर बिलकुल ऊँचा उठ जाता है ।

[10]. रम्याणि वीक्ष्य मधुरांश्च निशम्य शब्दान् । पर्यत्सु की भवति यत् सुखतापि जन्तुः ।। विक्रमार्वशीयम् प्रथम अंक श्लोक ११ (अ.शा. ५/२१)

[11]. त्वया विना सोऽपि समुत्सु को भवेत् । सखी जनस्ते किमुताद्र सौहृदः ।। (विक्रमो. प्र.१ श्लोक. ११)

[12]. इयमदिक मनोज्ञा, वल्केनापितन्वी, किमिवहिमधुराणां मंडनम्, नाकृतीनाम ।। (आ.शा. ९/९७)

[13]. आस्था और सौन्दर्य, 'डॉ. राम विलास शर्मा' पृ.७९.

[14]. मालविकाग्निमित्रम् - २/३ पृ.७१

[15]. शकुन्तलस्य विदायावसरे तस्याः मित्राणि तां बाधन्ते, विवाहसमये मालविका अपि मित्रैः बाध्यन्ते, ते तां बाधन्ते।

[16]. महाकवि कालिदास रमाशंकर तिवारी, पृ.१९३.

[17]. अभि.शाकु. द्वितीय अंक, लोक.४ पृ.५४

[18]. शाकुन्तलम्, प्रथम अंक (कालिदास ग्रंथावली, पृ.१७)

[19]. * शाकुन्तलम् षष्ठौड़क ।।४।। नास्ति सदेहः महा प्रभावो राजर्षिः। (कालिदास ग्रंथावली पृ- १०४)

[20]. कुमारसंभवम् एकादश सर्ग ।।१७।।

[21]. मालविकाग्निमित्रम् १/१६

[22]. मालविकाग्निमित्रम् २/६

[23]. द्रष्टव्य ऋतुसंहार' तृतीय सर्ग लोक. १०. पृ.४३८

[24]. अभ°शकु°। द्वितीय अदक, श्लोक

[25]. यथाकस्यापि पिण्ड खजुरेढेजितस्य तिन्तिण्याभिलाषो भवेत् तथा स्त्रीरत्न परिभाविनो भक्त इयमभ्यर्थना ।। शाकु.२ पृ.६०

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in